जीवन दायक लहू

सुसमाचारः कैसा आवश्यक – भाग 4

डॉ. डेविड प्लॉट

हमारा यह अध्ययन यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 3 पर आधारित है। हमारा यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वचन में हमारे लिए अनन्त महत्त्व की बातें हैं। हमने देखा है कि जगत के धर्मी एवं अनुग्रहकारी परमेश्वर ने आशारहित पापी मनुष्यों को देखा तो अपना पुत्रः प्रभु यीशु मसीह –देहधारी परमेश्वर को भेज दिया कि वह क्रूस पर उसके पाप के क्रोध को उठा ले और पुनरुत्थान द्वारा पाप पर अपना सामर्थ्य प्रदर्शित करे जिससे कि वे सब जो उस में विश्वास करें, उनका सदा के लिए परमेश्वर से मेल हो जाए। यह सुसमाचार है। हम सब यह जानते हैं परन्तु जैसा हमने देखा था कि इससे उद्धार नहीं होता। क्योंकि यह सब जानकर भी यीशु से यह सुनना अति संभव है, "मैं ने तुझे कभी नहीं जाना। हे कुकर्मी, मुझ से दूर हो जा।" यह सुसमाचार हमारे जीवनों में उद्धार के निमित्त परमेश्वर का सामर्थ्य कैसे बनता है? यह एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। अतः यीशु की वाणी सुनने को तैयार हो जाएं।

यूहन्ना 3:1–21 "फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है, क्योंकि काई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" नीकुदेमुस ने उस से कहा, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।' हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया "ये बातें कैसे हो सकती है?" यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, "तू इस्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता?" मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं वह कहते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ तो फिर कैसे विश्वास करोगे? कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का

पुत्र जो स्वर्ग में है। और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।"

यीशु ने कहा, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" यहां प्रश्न यह उठता है, "क्या आपका नया जन्म हो गया है?" बार्ना रिसर्च ग्रुप एक ऐसी संख्या है जो खोज करती है कि कितने मनुष्य विश्वासी हैं और उनका जीवन कैसा है। उनका पहला प्रश्न होता है, "क्या आपने यीशु के लिए वैयक्तिक समर्पण किया है जो आज भी आपके जीवन में महत्त्व रखता है।" आप कहेंगे, "हां।" तब दूसरा प्रश्न होगा, "क्या आपको विश्वास है कि आप स्वर्ग जाएंगे?" आपका उत्तर है, "हां मैं स्वर्ग जाऊंगा क्योंकि मैंने मसीह को ग्रहण किया है।" बस, अब आप बार्ना के लिए नया जन्म प्राप्त हैं। उनके खोज कार्य का आप परीक्षण करें तो आप पाएंगे कि इन नया जन्म प्राप्त मनुष्यों के विश्वास अलग–अलग हैं। अधिकांश विश्वासियों का मानना है कि कर्मों से वे स्वर्ग प्रवेश पाएंगे। अब विश्वासियों की जीवनशैली के विषय में वे कहते हैं, "उनका जीवन अनेक क्षेत्रों में अविश्वासियों का सा ही है।" एक सुर्खी में था, "नया जन्म प्राप्त विश्वासियों में तलाक की संभावना अविश्वासियों से कम नहीं।" उनकी खोज विवणिका में विश्वासियों का मनोरंजन, सांसारिक वस्तुओं से लगाव, अन्याय के प्रति विचार, आदि सब अविश्वासियों के सदृश्य है। बार्ना की रिसर्च का परिणाम यह हुआ है कि अनेक जन यह मानने लगे हैं कि विश्वासियों और अविश्वासियों में विशेष अन्तर नहीं है। परन्तु मैं तो यह कहूंगा कि उनका यह निष्कर्ष सही नहीं है। मैं उनकी खोज को गलत नहीं कह रहा हूं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जिन्हें उन्होंने विश्वासी स्वीकार किया है वे वास्तव में विश्वासी हैं नहीं क्योंकि मात्र यह कहना कि मैं ने मसीह को ग्रहण किया है और मैं स्वर्ग जाऊंगा, धर्मशास्त्र आधारित नया जन्म का प्रमाण नहीं है। यीशु में कौन विश्वास नहीं करता? मैं सड़क पर जितने मधव्यसनियों से मिला हूं वे भी यही कहते हैं। विवाह पूर्ण साथ

रहने वाले भी यही कहते हैं। तो आइए मेरे साथ यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 2 पद 23 देखें। मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि यह कहना कि मैं यीशु में विश्वास करता हूं कठिन नहीं जबकि नया जन्म का लेशमार्ग भी ज्ञान हो। जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था। "हमारे सामने नीकुदेमुस है जो इसका एक सही उदाहरण है। वह जानता था कि यीशु परमेश्वर की ओर से है परन्तु वह नया जन्म नहीं समझ पा रहा था। यीशु यदि कहता है कि नया जन्म पाए बिना स्वर्ग का राज्य कोई नहीं देख पाएगा तो यह हमारे लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि हम पूछें, "क्या हमारा नया जन्म हुआ है?"

हम यही देखेंगे कि परमेश्वर अपने धर्मशास्त्र में नये जन्म के बारे में क्या कहता है। यह हमारी बुद्धि की बातों के परे है। हम आराधना में बैठ कर धर्मशास्त्र से प्रवचन सुनते हैं और स्वीकार करते हैं परन्तु आवश्यक नहीं कि हमने नया जन्म प्राप्त किया हो। अतः मैं चाहता हूं कि सबसे पहले आप यह समझ लें कि उद्धार के कार्य में परमेश्वर ही सर्वोपरी नायक है और नया जन्म पाने में परमेश्वर का अनुग्रह संपूर्ण प्रक्रिया में व्याप्त है। विश्वास भी अनुग्रह ही का वरदान है। आपका विश्वास किसी निर्णय, वेदी पर समर्पण, प्रार्थना आदि पर आधारित नहीं है। वह वास्तव में परमेश्वर आधारित है जिसके अनुग्रह ने पूर्णरूप से आपको अभिभूत किया हुआ है और आपके जीवन को बदल दिया है। अतः हमारा प्रश्न यह है कि जब हम नया जन्म पाते हैं तब क्या होता है? हम यूहन्ना अध्याय 3 में इसके चार पक्ष देखेंगे। आवश्यक नहीं कि ये चारों पक्ष क्रम में हों।

पहला पक्षः जब हम नया जन्म पाते हैं तब परमेश्वर हमारी आवश्यकता को दर्शाता है। नीकुदेमुस यहूदियों का अगुआ था और लिखा है कि वह एक प्रतिष्ठित जन था। उसने संपूर्ण जीवन परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए यथासंभव प्रयास किया था। वह अन्य मनुष्यों को व्यवस्था पालन सिखाता था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए क्या करना आवश्यक है। यीशु उससे कहता है कि उसकी संपूर्ण धार्मिकता अन्त में निष्फल ही ठहरेगी। कर्म करना तो केवल परमेश्वर से अलगाव पर परदा डालना है। देखिए यीशु उससे क्या कहता है या यों कहें कि हमसे क्या कहता है।

परमेश्वर को जानने के लिए नया जन्म आवश्यक है। जब तक कोई नये सिरे से जन्म न ले वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता। वह हम में से प्रत्येक जन से यही कहता है। यह एक विकल्प नहीं है। यह स्वर्ग प्रवेश का मार्ग है जो प्रत्येक विश्वासी के लिए आवश्यक है।

दूसरा पक्षः परमेश्वर के बिना नया जन्म असंभव है। नये जन्म की बात सुनकर नीकुदेमुस आश्चर्यचकित हो गया। वह सोचने लगा कि संपूर्ण विकसित मानव का जन्म फिर से कैसे हो सकता है! फिर से जन्म लेना असंभव है। यीशु नीकुदेमुस को यही समझाना चाहता था कि यह एक स्वर्गिक प्रक्रिया है और केवल परमेश्वर के लिए ही संभव है। यह नया जीवन आत्मा देता है। मत्ती अध्याय 16 पद 26 और 27 में प्रभु यीशु के शिष्य उलझन में पड़ गए और यीशु से पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?" यीशु उनसे स्पष्ट कहता है, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" अर्थात परमेश्वर के बिना असंभव है।

अब मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि नया जन्म या उद्धार पाने से पूर्व हम कैसे थे, इसके बारे में बाइबल क्या कहती है।

पहली बात जो बाइबल कहती है वह हैः हम दुराचारी थे। उत्पत्ति अध्याय 8 पद 21 में लिखा है, "मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है।" अब देखिए लूका रचित सुसमाचार में अध्याय 11 पद 11–13 यीशु अपने शिष्यों से कहता है, "तुम बुरे होकर..." अर्थ स्पष्ट है कि हम जानते हैं, हम बुरे हैं। और अध्याय 3 पद 19 में यीशु ने स्पष्ट कहा है, "मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।" क्या थे? बुरे थे।

दूसरी बातः हम आत्मिक रोगी थे और हमें डॉक्टर की आवश्यकता थी। हम में असाध्य रोग था–मत्ती अध्याय 9:12।

तीसरी बातः हम पाप के दास थे। देखिए यूहन्ना अध्याय 8 पद 34, "यीशु ने उनको उत्तर दिया, 'मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।'" पौलुस रोम की कलीसिया को पत्र में लिखकर समझाता है कि हम अपने पापी स्वभाव की लालसाओं को पूरा करते हैं क्योंकि हम पाप के दास हैं– रोमि. 6:6, 20 और तीमुथियुस को लिखे अपने दूसरे पत्र में वह कहता है, "उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं।" इससे स्पष्ट होता है कि हम नया जन्म पाने से पूर्व शैतान के फंदे में थे अर्थात उसके दास थे।

चौथी बातः हम सत्य के प्रति अंधे थे। 1 कुरिन्थियों अध्याय 2 पद 14 में पौलुस कहता है, "शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं..." और 2

कुरिन्थियों अध्याय 4 पद 4 में वह कहता है, "उन अविश्वासियों के लिए जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर (शैतान) ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।" इफिसुस की कलीसिया को पौलुस अविश्वासियों की रीति के विषय कहता है कि वे अनर्थ रीति पर चलते हैं क्योंकि "उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है, और उनके मन कठोर हैं।" मत्ती 5:8 में यीशु कहता है, "धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"

पांचवी बातः हम अन्धकार के प्रेमी हैं। जैसा हमने अभी यूहन्ना अध्याय 3 पद 20 में पढ़ा, "जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।" और इफिसियों की पत्री अध्याय 5 पद 8 में पौलुस कहता है, "तुम तो पहले अन्धकार थे।" कहने को अर्थ यह है कि प्रभु को ग्रहण करने से पूर्व हम अन्धकार से प्रेम रखते थे।

छठवीं बातः हम क्रोध की सन्तान थे। याकूब अध्याय 4 पद 4 और रोमियों अध्याय 5 पद 10 दोनों में स्पष्ट है कि हम परमेश्वर के बैरी थे। यदि कोई कहे, "मैं ने तो अपने पूरे जीवन प्रभु से प्रेम किया है, तो वह झूठा है।" आपने अपने मन के काल्पनिक ईश्वर से प्रेम किया होगा परन्तु बाइबल के परमेश्वर से आपने घृणा की। इफिसियों की पत्री अध्याय 2 पद 1–3 में स्पष्ट व्यक्त है, "अन्य लोगों के समान स्वभाव से ही क्रोध की सन्तान थे।"

सातवीं और अन्तिम बातः हम आत्मिक रूप से मृतक थे। रोमियों 5 पद 12– हम मृत्यु दण्ड के अधीन थे। इफिसियों अध्याय 5 पद 14– आत्मिक मृत्यु के भागी। रोमियों अध्याय 6 पद 23– अनन्त मृत्यु के भागी। रोमियों अध्याय 5 पद 12– हमारी शारीरिक मृत्यु भी इसी का भाग है। इफिसियों 5:14– हमारी आत्मिक मृत्यु हो चुकी थी। रोमियों अध्याय 6 पद 23 में भी हम अनन्त मृत्यु के भागी थे। इफिसियों अध्याय 2 पद 1 में लिखा है कि हम अपने अपराधों में मरे हुए थे। नया जीवन प्रभु यीशु को ग्रहण करने से पूर्व हमारी यह दशा थी।

अब इस सूची के संदर्भ में मैं एक प्रश्न पूछता हूं, "नैतिक रूप से ही अनर्थकारी होना और बचपन से ही बुराई का स्वभाव रखना कैसे संभव होता है?" दूसरा, "यह कैसे संभव हुआ कि आपने अच्छाई को चुना जबकि आप तो बचपन ही से अनर्थकारी थे?"

"आप यदि आत्मिक रोगी थे तो चंगाई कैसे पाई?" "पाप के दासत्व से आपका छुटकारा कैसे संभव हुआ?" "सत्य के प्रति अंधे होकर आप देखने कैसे लगे?" "यह कैसे संभव हुआ कि आप ने अन्धकार से प्रेम करने के उपरान्त भी ज्योति को अपनाया?" "यह कैसे संभव हुआ कि आप जो क्रोध की सन्तान थे क्रोध से बच गए?" "आत्मिक मृतकों के लिए जीवित होना कैसे संभव हुआ?"

यही यीशु हमें समझाना चाहता है। यह हमारे कार्य नहीं हैं। यह स्वर्गिक कार्य हैं। परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवन में यह काम करता है। परमेश्वर के बिना यह कदापि संभव नहीं। यीशु कह रहा है कि हम में योग्यता एवं क्षमता नहीं कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें।

हम नीकुदेमुस के समान अपना प्रयास करते हैं। हम भले काम करते हैं और प्रति रविवार आराधना करते हैं, कुछ नियमों का पालन करते हैं। यीशु कहता है, "ऐसे नहीं होगा।" आप हाथ उठा देंगे औ संपूर्ण निराशा में असहाय होकर कहेंगे, "तो फिर मैं क्या करुं कि परमेश्वर को पा सकूं?" यही आवश्यक है। अब आप नये जीवन के निकट आ रहे हैं। आपकी निराशा ही नये जन्म का पहला कदम है। यह हमें तीसरे सत्य की ओर लाता है।

नया जीवन परमेश्वर पर निर्भरता है। मेरे भाइयों और बहनों, आपके पापों में आवश्यकता का बोध, परमेश्वर के लिए व्याकुलता के बिना नया जीवन संभव नहीं हें नीकुदेमुस ने पूछा, "यह कैसे संभव हो सकता है...?" यीशु उससे यह नहीं कहता, "नीकुदेमुस यह कर।" यीशु उसका ध्यान उस ओर आकर्षित कर रहा है जो परमेश्वर ने उसके लिए किया। यही तो सुसमाचार है कि परमेश्वर आपके पास आया है। वह अन्धकार में आया और ज्योति चमकी। वह हमारी मृत्यु में आकर हमें जीवन देता है। दया और अनुग्रह का परमेश्वर हमारे पास आकर हमें नया जीवन देता है। अब आप विचार करें कि यह सत्य हमारी आराधना को कैसे प्रभावित करता है। हमारी आराधना और स्तुतिगान परमेश्वर का अनुग्रह है। यदि वह हमसे भेंट करने हमारे पास नहीं आया होता तो हम अनन्त अन्धकार में जा रहे थे। यही कारण है कि हम आराधना करते हैं।

अब सोचें कि यह सुसमाचार प्रचार को कैसे प्रभावित करता है। आपके कार्यस्थल में एक मनुष्य परमेश्वर के प्रति अति कठोर है। आप सोचें कि परमेश्वर के आत्मा का सामर्थ्य कठोर से कठोर मन को भी वश में कर सकता है। जब हम उनके साथ सुसमाचार की चर्चा करते हैं तो वह उद्धार के निमित्त परमेश्वर का सामर्थ्य है जो उसकी महिमा के लिए आमूल परिवर्तन ले आता है। जब परमेश्वर आपकी आवश्यकता को उजागर करता है तब आप का नया जन्म होता है। "क्या परमेश्वर ने आपमें उसकी आवश्यकता को उजागर किया

है? क्या वह आपको पूर्ण निराशा के स्थान पर लाया है?" मैं ने आपको डेविड ब्रेनर्ड के विषय में बताया था कि वह घन्टों परमेश्वर से प्रार्थना करता था और परमेश्वर ने उस पर आत्मिक आवश्यकता को प्रकट किया। परमेश्वर आपको निराशा और आत्मिक आवश्यकता के स्थान पर ले आता है कि हमें यह बोध हो कि हम कुछ नहीं कर सकते।

दूसरा पक्षः परमेश्वर हमारा मन परिवर्तन करता है। नीकुदेमुस अब भी उलझन में है और सोच रहा है कि यह कैसे होता है। यीशु उसे समझाता प्रतीत हो रहा है परन्तु पद 9 से ऐसा लगता है कि वह उलझन में ही है। पद 5 में यीशु के शब्दों पर ध्यान दें, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" दूसरे शब्दों में, यीशु कह रहा है, "नीकुदेमुस तू ने अब तक के जीवन में अपने को, अपने चरित्र को और अपनी मान्यताओं को सुधारने में अपना संपूर्ण समय लगाया है परन्तु सत्य तो यह है कि यह सब बाहरी कार्य हैं, आवश्यकता इस बात की है कि तेरे मन में परिवर्तन आना है।" यह हमारे लिए गहन अर्थ रखता है क्योंकि हमारी सामान्य समझ यह है कि हमें धार्मिक काम करने हैं जैसे प्रार्थना करना या निर्णय लेना आदि अर्थात संसार से दूर हो जाओ और परमेश्वर की बातों को खोजो जो कठिन और निरुत्साह का काम है और आपको उसमें आनन्द नहीं मिलता। आप सोचते हैं कि आप असफल हैं परन्तु कम से कम बच तो गए। मेरे मित्रों, यह बाइबल आधारित विश्वास नहीं हैं नये जन्म में परमेश्वर आपके मन को बदल देता हैं आपके पुराने स्वभाव में सुधार नहीं लाता है। सुसमाचार आपमें सुधार नहीं लाता वरन् आपको नया स्वभाव प्रदान करता है। आपमें नया मन रोपित करता है जिससे कि आप परमेश्वर की बातों से प्रेम करने लगते हैं और आपकी मनोकामना बदल जाती है। आपका प्रेम, लगाव, और आपका मनोकामनाएं सब नई हो जाती हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सब कुछ पल भर में बदल जाता है और आपको संसार से लगाव ही नहीं रहता। परन्तु मेरे कहने का अर्थ यह है कि आपके मन की नवीनीकरण हो जाता है। अब हम कुड़कुड़ाते हुए धार्मिक कृत्य नहीं करते हैं परन्तु हम अधिकाधिक परमेश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं क्योंकि अब हमें परमेश्वर के सामने संसार फीका दिखाई देने लगता है। अब मैं आपको जल और आत्मा के विषय पुराने नियम में दिखाना चाहता हूं। यूहन्ना यहां जो कह रहा है वह ज्यों का त्यों यहेजकेल अध्याय 36 में है। आपको ध्यान रखना है कि पुराने नियम में पानी शोधन का चिन्ह था। सब अशुद्धियों से शुद्ध होना। अतः यूहन्ना अध्याय 3 में जल का उल्लेख पानी के बपतिस्में से प्रासंगिक नहीं है। तीतुस अध्याय 3 पद 5 में पौलुस भी यही कह रहा है कि हम अपने धर्म के कामों से नहीं, परमेश्वर की दया से उद्धार पाते हैं। वह हमें धोकर पवित्र आत्मा के द्वारा नया बनाता है। देखिए यहेजकेल अध्याय 36 पद 24 में परमेश्वर अपनी प्रजा से कह रहा है, "मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा

और देशों मे से इकट्ठा करुंगा; और तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुमको तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करुंगा।" अब जल और आत्मा से जन्म लेने का अर्थ क्या है?

पहला अर्थ यह है कि वह हमें शुद्ध करता है। वह हमें धो देता है। तीतुस अध्याय 3 पद 5 में यही व्यक्त है कि वह हमें सब अशुद्धताओं और पापों से शुद्ध करता है। और इसके आगे यह भी होता है कि वह हमें नया मन देता है जैसा यहेजकेल अध्याय 35 पद 26 में है। और परमेश्वर कहता है, "तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करुंगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करुंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" अतः वह हमारा शोधन करता है।

इसका दूसरा अर्थ है, वह हम में अन्तर्वास करता है। परमेश्वर ने कहा है कि वह अपना आत्मा हमें देगा। यहेजकेल अध्याय 37 में यहोवा कहता है कि उसका आत्मा जब प्रवेश करता है तो मृतक भी जी उठते हैं। जब परमेश्वर हमारा मन बदल देता है तब ऐसा ही होता है। इस प्ररिप्रेक्ष्य में सोचें कि हमने उद्धार को अपने पापों की क्षमा तक ही सीमित क्यों रखा है। हम सोचते हैं, "हमारे पाप क्षमा हुए अब हम जैसा चाहें वैसा जीवन ही सकते हैं।" पापों से मुक्त हो जाना अच्छा है परन्तु हम यह जल और आत्मा को क्यों नहीं अपनाते अर्थात शोधन और आत्मा के अन्तर्वास से वंचित रहते हैं। इस कारण हम बाइबल आधारित उद्धार से चूक जाते हैं। यही कारण है कि हम उद्धार को धार्मिक कृत्यों से जोड़ देते हैं और अपना जीवन आचरण बुराई और आत्मिक शिथिलता में पड़ा रहने देते हैं। इस स्थिति में हम संसार को क्या कहेंगे कि हमारा आचरण ऐसा क्यों है? हम बहाना बनाते हैं कि मनुष्य सिद्ध नहीं है परन्तु परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।" इस प्रकार आप में और संसार में अन्तर केवल यही रह जाता है कि आपके पास स्वर्ग प्रवेश का टिकट है। यह सुसमाचार नहीं है।

नये जन्म में परमेश्वर हमारे मन को नया कर देता है और हम में अपना आत्मा डाल देता है जिसके कारण हमारा जीवन अलग दिखाई देता है। यूहन्ना 3 में प्रभु यीशु आत्मा की तुलना हवा से करता है। क्यों? क्योंकि हवा दिखाई नहीं देती है। केवल उसका प्रभाव देखा जाता है। इसी प्रकार आत्मा का भी प्रभाव देखा जाता है। मैं सोचता हूं कि हमने उद्धार को आत्मा के सामर्थ्य से और मन परिवर्तन के कार्य से वंचित कर दिया है कि वह हमारी आंखें खोल देता है, हमारी मनोकामनाओं को बदल देता है, हमें मृत्यु से जीवन में लाता है और हमारा जीवन का मार्ग ही नया बना देता है। मैं प्रार्थना के विरुद्ध नहीं हूं परन्तु यह मानना कि यीशु को ग्रहण करने के लिए कोई आपके साथ प्रार्थना करे, यह सच नहीं है। आपको किसी के

पीछे–पीछे प्रार्थना दोहराने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि पवित्र आत्मा आपको प्रेरित करेगा कि आप परमेश्वर को पुकारें और शब्द स्वतः ही आपके मुंह से निकलेंगे चाहे आपने पहले कभी प्रार्थना न की हो। हम किसी को इस प्रकार बाध्य करके आत्मा के काम में बाधा उत्पन्न न करें। मन परिवर्तन परमेश्वर के आत्मा का कार्य है। अतः हम आनन्दित हों। यहेजकेल 36 में सुनिये परमेश्वर क्या कहता है– पद 24, "मैं तुम को जातियों में से ले लूंगा और देशों में से इकट्ठा करुंगा; और तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे... मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करुंगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूंगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करुंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" क्या परमेश्वर ने आपका मन परिवर्तन किया है? नया जीवन पाने पर अकस्मात ही सिद्धता नहीं आ जाती है। पापों से संघर्ष तो बना ही रहता है। परन्तु धर्मशास्त्र यह कहता है कि आपके मन का शोधन होता है। आप नई सृष्टि हो जाते हैं जिसका प्रभाव दिखाई देता है। आप स्वयं पवित्र आत्मा के कार्यों देखेंगे। क्या परमेश्वर ने आपके नया मन दिया है? यदि आपका नया जन्म हुआ है तो परमेश्वर आपकी आवश्यकताओं को प्रकट करता है और हमारे मन को बदल देता है।

तीसरा पक्ष हैः परमेश्वर हमारी मान्यताओं को सक्षम बनाता है। यूहन्ना अध्याय 3 पद 1–11 में लिखा है कि हमें जीवन देने और नये जीवन में लाने के लिए परमेश्वर क्या करता है। यहां हम देखते हैं कि एक विशेष शब्द है, "विश्वास" जो मेरे विचार में सात बार आया है। यही तो हम देख रहे थे कि जो विश्वास करेगा उनका सदा के लिए परमेश्वर से मेल कराया जाएगा। रोमियों अध्याय 3 और 4 में 20 बार से अधिक "विश्वास" शब्द आया है। धर्मशास्त्र स्पष्ट दर्शाता है कि विश्वास हम में सुसमाचार रोपण का साधन है। हम यह निश्चित कर चुके हैं कि विश्वास बौद्धिक स्वीकृति से कहीं अधिक है। अतः हम नये जीवन के परिदृश्य में विश्वास की भूमिका देखेंगे। अब तक हम देख रहे थे कि परमेश्वर हमारा शोधन करता है, हमें नया मन देता है, हम में पवित्र आत्मा उण्डेलता है, हमारी आंखें खोलता है और हमारी आत्मिक मृत्यु से हमें जीवित करता है। परमेश्वर किस आधार पर ऐसा करता है? सुसमाचार में, मसीह यीशु में हमारे विश्वास करने पर। निःसन्देह उद्धार के क्षेत्र में विश्वास हमारा कार्य है। हमारा अनन्त जीवन ही विश्वास पर निर्भर है। हमारे उद्धार के लिए कोई और मसीह में विश्वास नहीं करेगा। हमारा यह विश्वास परमेश्वर के कार्य अर्थात उसकी दया एवं उसके अनुग्रह के साथ चलता है। अब आप पूछेंगे, "ये तीनों एक साथ कैसे हो सकते हैं?" परमेश्वर अपनी प्रभुता में आश्चर्यकर्म करता है जिसमें पवित्र आत्मा हमारा मन परिवर्तन करता है। वह उद्धार द्वारा अपनी महिमा प्रकट करता है। यूहन्ना अध्याय 6 पद 44 में यीशु कहता है, "कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले..." अब प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखिए

परमेश्वर इस क्षेत्र में क्या करता है– प्रेरितों के काम अध्याय 16 पद 14, "लुदिया नामक थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।" परमेश्वर ने उसका मन खोला और उसने सुसमाचार ग्रहण किया। प्रेरितों के काम अध्याय 11 पद 18 में देखिए अन्यजातियों का मन परिवर्तन, "परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है।" और अध्याय 14 पद 27 में परमेश्वर अन्यजातियें में विश्वास उत्पन्न करता है। प्रेरितों के काम अध्याय 15 पद 9, "और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके..." तो आप देख रहे हैं कि नया जन्म, परमेश्वर का अनुग्रह एवं उसकी दया में विश्वास की मुख्य भूमिका है।

अब प्रश्न यह उठता है कि हम विश्वास तो करते हैं परन्तु इस विश्वास में होता क्या है?

1. हम पापों से फिरते हैंः यूहन्ना अध्याय में लिखा है कि हम अन्धकार से प्रेम रखते हैं परन्तु जब परमेश्वर हमारी आंखें खोलता है तब हम ज्योति को देखते हैं और हमें यीशु मसीह में परमेश्वर की दया और उसका अनुग्रह दिखाई देता है तो हम अन्धकार से निकल कर उस ज्योति में आ जाते हैं जिससे हम पहले घृणा करते थे। यह सुसमाचार का निमन्त्रण है जिसे हम प्रेरितों के काम की संपूर्ण पुस्तक में देखते हैं– अध्याय 2 पद 38 में पतरस ने सुसमाचार का पहला सन्देश दिया और श्रोताओं ने पूछा, "हम क्या करें?" अध्याय 3 पद 19 में पतरस उनसे कहता है, "मन फिराओ और परमेश्वर के पास आ जाओ।" अर्थात पापों से विमुख हो जाओ।

2. उसके अनुग्रह से हम मसीह में विश्वास करते हैं। हम पाप से मुंह मोड़ कर मसीह में विश्वास करते हैं कि एकमात्र वही है जो परमेश्वर से हमारा मेल करा सकता है। इसका एक चित्रण पुराने नियम में है। जब इस्राएल जंगल में था तब सांपों के काटने से वे मरने लगे तब परमेश्वर ने कहा कि वह पीतल का एक सांप बना कर ऊंचे पर लटका दे जिससे कि सांप के काटने पर वे उसे देखें तो मरें नहीं। अतः मसीह में विश्वास करना और पापों से मन फिराना मन पर निर्भर है। प्रेरितों के काम अध्याय 16 पद 31 में फिलिप्पुस नगर का जेल अधीक्षक प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करके उद्धार पाता है। अब प्रश्न यह है, "परमेश्वर के अनुग्रह के संदर्भ में यह विश्वास आपके जीवन में सत्य है?" उद्धार के लिए पाप से मुंह मोड़ कर मसीह में विश्वास करना। यह नये जन्म की प्रक्रिया का एक भाग है।

3. नये जन्म में परमेश्वर हमारा जीवन बदल देता है। हम इस विषय अपने पूर्व के अध्ययन में चर्चा कर चुके हैं जब हम आत्मा के अन्तर्वास पर विचार कर रहे थे परन्तु मैं यूहन्ना में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य बताना

चाहता हूं। यूहन्ना अध्याय 3 पद 21, "जो सत्य पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" यहां मैं आपको दो सच्चाइयों के प्रकाश में लाना चाहता हूं।

एक, वह हमें हमारी अनन्त भलाई के लिए बदल देता है। हम इस विषय चर्चा कर चुक हैं परन्तु यहां विशेष करके अन्धकार और ज्योति की चर्चा की जाएगी। यूहन्ना संपूर्ण सुसमाचार वृत्तान्त में ज्योति और अन्धकार की तुलना करता है। अन्धकार बुराई का प्रतीक है और ज्योति अच्छाई का प्रतीक है। अतः नया जन्म पाने पर जो होता है वह यह है कि आप अच्छाई को अनुभव करते हैं। अब आप अपने पूर्व के जीवन पर ध्यान देंगे तो आप देखेंगे कि आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संसार से अत्यधिक लगाव रखते थे और परमेश्वर एक विचार मात्र या चर्चा का विषय मात्र था। अब जब परमेश्वर ने आपका मन परिवर्तन किया, आपका जीवन बदल दिया तो आपको यह बोध हुआ कि परमेश्वर भला है, वह महिमा से पूर्ण है और उसकी तुलना में संसार को सर्वोत्तम वस्तु भी अब व्यर्थ प्रतीत होती है। परमेश्वर द्वारा हमारे मन परिवर्तन का यह परिदृश्य है–अनन्त भलाई, ज्योति का अनुभव, परमेश्वर की भलाई का अनुभव। अब हमारा संपूर्ण सन्तोष उसी में पाया जाता है और हम उसमें उन्नति करते हैं। यह हमारा अगले अध्ययन का विषय होगा। यह परिवर्तन हमारे नये जन्म पर ही आरंभ हो जाता है और हम इसे देख पाते हैं।

दूसरी सच्चाई यह है कि परमेश्वर हमें उसकी अनन्त महिमा के लिए परिवर्तित करता है। आपने यूहन्ना अध्याय 3 पद 21 में ध्यान दिया कि वह अपना सामर्थ्य प्रकट कर रहा है, "ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" परमेश्वर हमारे नये जन्म के द्वारा अपनी महिमा प्रकट करता है। वह यह दिखाना चाहता है कि यह कार्य केवल वही कर सकता है। यह वही परिदृश्य है जो हमने पिछले अध्ययन मे देखा था कि प्रभु यीशु परमेश्वर की महिमा प्रकट करने के लिए क्रूस पर मरा जिससे कि वह धर्मी ठहरे और उस पर विश्वास करनेवालों को भी धर्मी ठहराए। इस प्रकार हमारी अनन्त भलाई उसकी अनन्त महिमा के साथ–साथ चलती है। परमेश्वर यहेजकेल अध्याय 36 पद 22 और 23 में कहता है कि वह अपनी महिमा के लिए ही यह सब करता है– "तुम्हारे निमित्त नहीं परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूं... मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊंगा... तब वे जातियां जान लेंगी कि मैं यहोवा हूं।" अतः परिदृश्य यह है कि परमेश्वर इस संपूर्ण प्रक्रिया में महिमा पाता है। यही उसकी योजना है। वह अपनी महिमा के लिए करता है।

अब इन दोनों सच्चाइयों को उद्धार के संदर्भ में देखेंगे।

1. धर्मशास्त्र में कहीं भी उद्धार को मानवीय कर्म पर आधारित नहीं देखते हैं कि कोई नरक में जानेवालों की कतार मे से निकलकर स्वर्ग जानेवालों की कतार में आ जाए। धर्मशास्त्र के अनुसार उद्धार हमारे मन में परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर आपको मृत्यु से जीवन में लाता है और अपनी महान महिमा को आपके उद्धार के द्वारा प्रकट करता है।

अब आती है दूसरी सच्चाईः उद्धार को मन परिवर्तन से जुदा करने का अर्थ है कि परमेश्वर आपको नरक से बचा सकता है परन्तु दैनिक जीवन में पाप पर विजय नहीं दिला सकता है। यह परमेश्वर की निन्दा है। मेरे मित्रों जिस परमेश्वर ने अपने पुत्र को मृतकों मे से जिलाया क्या वह आपको अनन्त विनाश से बचा कर दैनिक जीवन में पाप से बचाने का समर्थ्य नहीं रखता? क्या परमेश्वर ने आपका जीवन परिवर्तित नहीं किया है? क्या आपका जीवन परमेश्वर की महिमा के कार्यों का प्रदर्शन नहीं है? इसी कारण यीशु ने कहा कि जब तक कोई नये सिरे से जन्म न ले वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता। अतः अन्तिम प्रश्न यह है, "क्या आपका नया जन्म हुआ है?" क्या यह सुसमाचार आपके जीवन में वास्तविकता बन गया है? इस प्रश्न को अनदेखा न करें क्योंकि यह प्रश्न आपको दो में से एक मार्ग पर ले चलेगा। परमेश्वर ने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं उसके अन्तर्वासी आत्मा के द्वारा पाप से मुंह फेर कर मसीह में विश्वास करुं। आपने स्वयं जान लिया होगा कि आत्मा भली है और आपकी आत्मा को गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। नये जन्म का यही अर्थ है और यदि आपके जीवन का यह अनुभव नहीं है तो मैं आपसे निवेदन करुंगा कि आप परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके मन को खोजे और आपमें यह काम करे।

क्या आपका नया जन्म हुआ है?